50,000 किलो का डायनासौर

डायनासौर की एक नई प्रजाति की पहचान हुई है जो शायद इस धरती पर चहलकदमी करने वाला सबसे भारी-भरकम जानवर रहा होगा। *साइंटिफिक रिपोर्ट्स* नामक शोध पत्रिका के 4 सितंबर के अंक में इस सुपर-भीमकाय जानवर का विवरण प्रकाशित हुआ है।

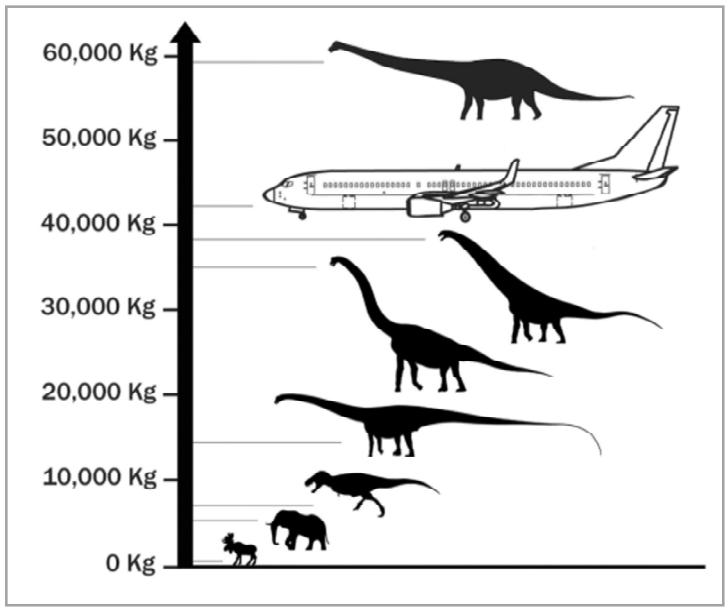

ड्रेडनॉटस स्क्रेनी (निडर जीव) नामक इस प्रजाति का जीवाश्म 2005-09 के बीच अर्जेंटाइना में खोजा गया था। जीवाश्म के रूप में इसकी जो हड्डियां मिली हैं वे बहुत अच्छे से संरक्षित हैं। यह टाइटेनोसौर समूह का सदस्य है जो शाकाहारी था।

इस जीवाश्म की खोज व विश्लेषण का श्रेय फिलेडेल्फिया स्थित ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय के केनेथ लेकोवारा और उनके दल को जाता है। दरअसल, एक ही प्रजाति के दो जीवों के जीवाश्म 6.6-8.4 करोड़ वर्ष पूर्व जमा हुई तलछट से बनी चट्टान में पाए गए थे।

इनमें से बड़े वाले नमूने की खोपड़ी के नीचे वाली 45 प्रतिशत हड्डियां संरक्षित मिली थीं। शोधकर्ताओं ने जंतुओं की सममिति के आधार पर एक बाजू की मिली हुई हड्डियों को देखकर दूसरे बाजू की हड्डियों की कल्पना कर ली। इस तरह वे जंतु की गर्दन, धड़ और पूंछ की करीब 70 प्रतिशत हड्डियों का पुनर्निर्माण कर पाए।

अगला कदम शेष हड्डियों के बारे में निर्णय करने का था। इसके लिए उन्होंने यह ध्यान दिया कि अन्य निकट सम्बंधी प्रजातियों में इन हड्डियों और शेष हड्डियों के बीच आकार में क्या अनुपात होता है। इस तरह से इस जीव का लगभग पूरा जीवाश्म तैयार हो गया और इसके आधार पर लेकोवारा और साथियों ने अनुमान लगाया है कि *ड्रेडनॉटस* थूथन से लेकर पूंछ तक पूरे 26 मीटर (85 फीट, करीब 7 कबड्डी मैदान के बराबर) का रहा होगा।

ड्रेडनॉटस के डील-डौल का अंदाज़ लगाने के बाद नंबर आया उसके वज़न का। चौपायों के भार का अनुमान लगाने के लिए आम तौर पर दो हड्डियों की परिधि का उपयोग किया जाता है - अगली और पिछली टांगों की ऊपरी हड्डियां यानी ह्यूमरस और फीमर। जब लेकोवारा ने यह गणना की तो समझ में आया कि यह जीवाश्म जिस जंतु का है उसका वज़न कम से कम 50 टन यानी 50,000 किलोग्राम रहा होगा। और तो और, लेकोवारा ने जोड़ा है कि यह जंतु इस प्रजाति का पूर्ण प्रौढ़ नमूना नहीं है। यानी हो सकता है कि इस प्रजाति के डायनासौर कहीं ज़्यादा वज़नी रहे होंगे।

वैसे यह सही है कि पूर्व में कुछ अन्य टाइटेनोसौर जीवाश्मों के मामलों में अनुमान था कि उनके वज़न 100-100 टन से भी ज़्यादा रहे होंगे मगर ये अनुमान काफी आधे अधूरे जीवाश्मों के आधार पर लगाए गए थे। ***(स्रोत फीचर्स)***